Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 3, Issue 1, January-February 2025
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2025.v03i01.1352

पर्यावरणीय राजनीति का उभरता विमर्श : बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में

विकाश कुमार विधाता

शोधार्थी
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

शोध–सार

पर्यावरणीय राजनीति का उभरता विमर्श समकालीन वैश्विक और स्थानीय संदर्भ में लोकतंत्र, विकास और स्थिरता के अंतर्संबंध को रेखांकित करता है। बिहार राज्य, जो हिमालयी नदियों की बाढ़, गंगा प्रदूषण, सूखा, मिट्टी की क्षरण और जलवायु परिवर्तन की चरम घटनाओं से अत्यधिक प्रभावित है, इस विमर्श का एक महत्वपूर्ण केस स्टडी प्रस्तुत करता है। राज्य की भौगोलिक संवेदनशीलता उत्तर में नेपाल सीमा से आने वाली बाढ़, दक्षिण में सूखा प्रभावित क्षेत्र और गंगा बेसिन की स्थिति पर्यावरणीय मुद्दों को राजनीतिक एजेंडे में लाती है, हालांकि चुनावी राजनीति में ये अक्सर माध्यमिक रह जाते हैं। बिहार में पर्यावरणीय राजनीति का विमर्श मुख्य रूप से बाढ़ प्रबंधन, तटबंधों की राजनीति, जल जीवन हरयाली अभियान, जलवायु परिवर्तन पर बिहार राज्य कार्य योजना और गंगा सफाई जैसे कार्यक्रमों के इर्द–गिर्द घूमता है। नीतिश सरकार सरकार के शासन में जल संरक्षण, वनरोपण, नवीकरणीय ऊर्जा और आपदा प्रबंधन को प्राथमिकता दी गई, जो विकासात्मक राजनीति को पर्यावरणीय अनुकूलन से जोड़ती है। लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में मतदाता प्राथमिकताएं रोजगार, जाति और बुनियादी सुविधाओं पर केंद्रित रहती हैं, जिससे पर्यावरणीय मुद्दे प्रतिक्रियात्मक बने रहते हैं।

यह शोध उभरते विमर्श को जांचता है जिसमें पर्यावरण न्याय, सामुदायिक भागीदारी, संघर्ष और हरित अर्थव्यवस्था के अवसर शामिल हैं। बिहार की गरीबी, उच्च जनसंख्या घनत्व और कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था पर्यावरणीय गिरावट को सामाजिक–आर्थिक असमानता से जोड़ती है। ग्लोबल क्लाइमेट चेंज फ्रेमवर्क और राष्ट्रीय नीतियों के साथ राज्य की पहलें संरेखित हैं, लेकिन क्रियान्वयन में चुनौतियां बनी हुई हैं।

शब्दकुंजी : पर्यावरणीय राजनीति, जल संरक्षण, वनरोपण, नवीकरणीय ऊर्जा और आपदा प्रबंधन इत्यादि

भूमिका :

पर्यावरणीय राजनीति का उभरता विमर्श आधुनिक लोकतंत्रों में विकास, न्याय और पारिस्थितिकी संतुलन के बीच जटिल अंतर्संबंधों को प्रतिबिंबित करता है, जहां पारंपरिक आर्थिक विकास के मॉडल अब पर्यावरणीय स्थिरता की अनिवार्यता से चुनौतीपूर्ण हो चुके हैं। बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में यह विमर्श और भी प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि यह राज्य भारत के सबसे अधिक आबादी वाले और गरीबी–प्रभावित क्षेत्रों में से एक है, जो हिमालयी नदियों की प्राकृतिक बाढ़, गंगा नदी के भारी प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चरम मौसम घटनाओं, वन क्षेत्रों की कमी, मिट्टी की उर्वरता ह्रास और शहरी–ग्रामीण प्रदूषण के बहु–आयामी संकटों का सामना कर रहा है। बिहार की भौगोलिक स्थिति उत्तर बिहार में कोसी, गंडक, बूढ़ी गंडक जैसी नदियों का बाढ़ प्रवण क्षेत्र, दक्षिण में सूखा प्रभावित

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 3, Issue 1, January-February 2025
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2025.v03i01.1352

भाग और मध्य में गंगा का बहाव इसे पर्यावरणीय राजनीति का एक जीवंत प्रयोगशाला बनाती है, जहां प्राकृतिक आपदाएं न केवल आर्थिक नुकसान पहुंचाती हैं बल्कि राजनीतिक गतिशीलता, मतदाता व्यवहार, नीति निर्माण और सामाजिक आंदोलनों को भी आकार देती हैं।

ऐतिहासिक रूप से बिहार की राजनीति जाति, वर्ग और क्षेत्रीय असमानताओं पर केंद्रित रही है, लेकिन 21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय गिरावट ने एक नया विमर्श उभारा है जो विकासात्मक राजनीति को हरित अनुकूलन से जोड़ता है। स्वतंत्र भारत के बाद से बाढ़ बिहार की सबसे बड़ी पर्यावरणीय राजनीतिक चुनौती रही हैय राज्य में वार्षिक बाढ़ पूरे देश के बाढ़ क्षति का 30–40 प्रतिशत प्रभावित करती है और लाखों लोगों को विस्थापित करती है। तटबंधों का निर्माण, जो औपनिवेशिक काल से चला आ रहा है, राजनीतिक वादों और इंजीनियरिंग समाधानों का प्रतीक बन गया, लेकिन इनकी असफलता और पारिस्थितिकी असंतुलन ने स्थानीय विरोध और पर्यावरण न्याय की मांग को जन्म दिया। कोसी नदी पर बांध और बाढ़ प्रबंधन की राजनीति ने दशकों से चुनावी मुद्दों को प्रभावित किया, जहां शासक वर्ग बाढ़ राहत को पितृसत्तात्मक कल्याण के रूप में प्रस्तुत करता है, जबकि आलोचक इसे संरचनात्मक असफलता मानते हैं।

नीतिश कुमार के नेतृत्व में ''सुशासन'' युग ने पर्यावरणीय राजनीति को विकास एजेंडे का हिस्सा बनाया। जलवायु परिवर्तन पर बिहार राज्य कार्य योजना ने राज्य को राष्ट्रीय एन.ए.पी.सी.सी. से जोड़ा, जिसमें जल संरक्षण, वन संरक्षण, कृषि अनुकूलन और आपदा प्रबंधन पर जोर दिया गया। जल–जीवन–हरियाली अभियान जैसी पहलें सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से जल संचयन, वृक्षारोपण और भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देती हैं, जो न केवल पर्यावरणीय हैं बल्कि राजनीतिक रूप से भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये ग्रामीण मतदाताओं को जोड़ती हैं। बिहार नवीकरणीय ऊर्जा नीति और इलेक्ट्रिक वाहन नीति जैसी पहलें कम कार्बन विकास पथ की ओर इशारा करती हैं, जबकि यू.एन.ई.पी. के सहयोग से जी.एच.पी. इन्वेंटरी तैयार करना राज्य की हरित महत्वाकांक्षा को दर्शाता है। बाढ़ और सूखे जैसी चरम घटनाएं चुनावी राजनीति में प्रमुख मुद्दा बनने के बजाय प्रतिक्रियात्मक उपायों तक सीमित रहती हैंय मतदाता रोजगार, शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं को प्राथमिकता देते हैं।

गंगा प्रदूषण बिहार की पर्यावरणीय राजनीति का एक और महत्वपूर्ण आयाम है। पटना, बक्सर और अन्य शहरों से अनुपचारित नाले सीधे गंगा में गिरते हैं, जिससे जल ऑक्सीजन स्तर शून्य के करीब पहुंच जाता है और जलजीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ता है। नमामि गंगे कार्यक्रम के बावजूद क्रियान्वयन की चुनौतियां बनी हुई हैं, जो केंद्र–राज्य समन्वय, स्थानीय शासन और औद्योगिक नियमन की राजनीति को उजागर करती हैं। बिहार की कृषि अर्थव्यवस्था, जो मानसून पर निर्भर है, जलवायु परिवर्तन से बढ़ते अनिश्चितता का सामना कर रही हैय अनियमित वर्षा, बढ़ते तापमान और मिट्टी की उर्वरता ह्रास ने किसानों के प्रवास और खाद्य सुरक्षा को प्रभावित किया है। पर्यावरणीय राजनीति यहां सामाजिक न्याय से जुड़ जाती है, क्योंकि गरीब, दलित और पिछड़े वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, जिससे पर्यावरण न्याय का विमर्श उभरता है।

वैश्विक संदर्भ में पर्यावरणीय राजनीति पारिस्थितिक आधुनिकीकरण, सतत विकास लक्ष्य और जलवायु न्याय पर आधारित है। मार्टेन हेजर जैसे विचारकों के अनुसार, पर्यावरणीय विमर्श नीति प्रक्रियाओं को आकार देता है, जहां बिहार जैसे राज्यों में लोकतंत्र जलवायु समस्याओं का समाधान कर सकता है या नहीं, यह बहस का विषय है। बिहार में लोकतांत्रिक राजनीति बाढ़ राहत वितरण, तटबंधों निर्माण और हरित योजनाओं के माध्यम से वोट बैंक निर्माण करती है, लेकिन दीर्घकालिक संरचनात्मक सुधार जैसे नदी लिंकिंग, वन संरक्षण और शहरी नियोजन में कमी बनी हुई है। वाल्मीकि बाघ अभयारण्य, कंवर झील जैसे संरक्षित क्षेत्र पर्यावरण संरक्षण की संभावनाएं दिखाते हैं, लेकिन विकासात्मक दबाव और अवैध अतिक्रमण चुनौतियां हैं।

उभरते विमर्श में युवा, शिक्षा प्राप्त वर्ग और सिविल सोसाइटी की भूमिका बढ़ रही है। सोशल मीडिया, एनजीओ और शैक्षणिक संस्थान जागरूकता फैला रहे हैं। हालांकि, राजनीतिक दलों के घोषणा–पत्रों में पर्यावरणीय मुद्दे अभी भी

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 3, Issue 1, January-February 2025
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2025.v03i01.1352

हैं। भविष्य में, हरित रोजगार, जलवायु–स्मार्ट कृषि और लचीला बुनियादी ढांचा पर्यावरणीय राजनीति को मुख्यधारा बना सकते हैं। बिहार की गरीबी उन्मूलन और सतत विकास की यात्रा पर्यावरणीय राजनीति के बिना अधूरी रहेगी, क्योंकि पर्यावरण न केवल संसाधन है बल्कि अस्तित्व और न्याय का आधार है। इस विमर्श का विस्तार नीति विश्लेषण, क्षेत्रीय अध्ययन और तुलनात्मक दृष्टिकोण से होना चाहिए ताकि बिहार न केवल संकट का सामना करे बल्कि हरित विकास का मॉडल भी प्रस्तुत करे।

उद्देश्य :

1. बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में पर्यावरणीय राजनीति के उभरते विमर्श को समझना और उसके प्रमुख आयामों का विश्लेषण करना।
2. राज्य सरकार की पर्यावरणीय पहलों के राजनीतिक–प्रशासनिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।
3. बिहार में पर्यावरण न्याय, सतत विकास और हरित राजनीति की संभावनाओं तथा चुनौतियों की पहचान कर भविष्योन्मुखी सिफारिशें प्रस्तुत करना।

साहित्य की समीक्षा :

पर्यावरणीय राजनीति के विमर्श में नाकामिजो (2021)[1] ने बिहार की बाढ़ और लोकतांत्रिक राजनीति का गहरा विश्लेषण किया है। उन्होंने ऐतिहासिक संदर्भ में तटबंधों की राजनीति को उजागर किया, जहां बाढ़ राहत वितरण वोट बैंक निर्माण का माध्यम बन जाता है, लेकिन संरचनात्मक समाधान अनुपस्थित रहते हैं।

पियर्सी (2021)[2] की अध्ययन बिहार में जलवायु परिवर्तन और लोकतंत्र के संबंध पर केंद्रित है। बाढ़ प्रबंधन नीतियां लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं, पर मतदाता प्राथमिकताएं अभी भी जाति और रोजगार पर केंद्रित रहती हैं।

बिहार राज्य कार्य योजना (2015)[3] दस्तावेज राज्य की जलवायु संवेदनशीलता, अनुकूलन रणनीतियों और क्षेत्रीय योजनाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है, जिसमें कृषि, जल संसाधन और आपदा प्रबंधन पर जोर दिया गया है।

शर्मा (2022)[4] ने दक्षिण बिहार में पर्यावरणीय परिवर्तन और भूजल परिवर्तनशीलता का अध्ययन किया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन, मानवीय हस्तक्षेप और भूजल ह्रास के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया।

जल जीवन हरयाली अभियान पाण्डेय (2025)[5] की समीक्षा में सामुदायिक भागीदारी, जल संरक्षण और हरित कृषि की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। यह अभियान बिहार की ग्रामीण पर्यावरण नीति का प्रमुख उदाहरण है।

अमित रंजन (2024)[6] ने 2014–2019 के बीच भारत की पर्यावरणीय राजनीति की आलोचना की, जिसमें केंद्र और राज्य नीतियों के बीच तालमेल तथा औद्योगिक विकास बनाम पर्यावरण संरक्षण की द्वंद्वात्मकता शामिल है।

कोसी क्षेत्र में पर्यावरण न्याय[7] पर हाल के अध्ययनों ने तटबंधों के अंदर और बाहर रहने वाले समुदायों के बीच असमान जोखिम वितरण तथा लैंगिक असमानता को उजागर किया है।

मोंगाबे इंडिया (2025)[8] की रिपोर्ट बताती है कि बिहार में चरम मौसम घटनाएं (बाढ़–सूखा) लोगों को प्रभावित करती हैं, लेकिन चुनावी राजनीति में ये मुद्दे सीमांत रह जाते हैं।

Namami Gange कार्यक्रम की प्रभावशीलता पर कानूनी–प्रशासनिक अध्ययन केंद्र–राज्य समन्वय, स्थानीय शासन और औद्योगिक प्रदूषण नियंत्रण की चुनौतियों पर चर्चा करते हैं।

भारतीय पर्यावरणीय राजनीति पर सामान्य साहित्य स्थानीय शासन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और सामाजिक आंदोलनों के अंतर्संबंधों को रेखांकित करता है, जो बिहार के संदर्भ में भी लागू होता है।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 3, Issue 1, January-February 2025
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2025.v03i01.1352

बिहार में पर्यावरणीय राजनीति का विमर्श

बाढ़ प्रबंधन, गंगा प्रदूषण और जलवायु अनुकूलन के इर्द–गिर्द केंद्रित है। राज्य की भौगोलिक स्थिति उत्तर में नेपाल से आने वाली नदियों (कोसी, गंडक) की बाढ़, गंगा बेसिन का प्रदूषण और दक्षिणी सूखा क्षेत्र इसे अत्यधिक संवेदनशील बनाते हैं। नीतिश कुमार के काल में सुशासन और विकास एजेंडे को पर्यावरणीय आयाम दिए गए, जिससे एस.ए.पी.सी.सी. और जल जीवन हरयाली अभियान जैसे कार्यक्रम सामने आए। तटबंधों निर्माण राजनीतिक वादों का हिस्सा रहा, पर इनकी दीर्घकालिक असफलता ने स्थानीय विरोध और पर्यावरण न्याय की मांग को जन्म दिया।

जल जीवन हरयाली अभियान (2019) जल संचयन, वृक्षारोपण, भूजल पुनर्भरण और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित है। यह 15 विभागों के समन्वय से चलाया जा रहा है और सी.ओ.पी.–28 में अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा प्राप्त की। फिर भी क्रियान्वयन में फंडिंग, तकनीकी क्षमता और निगरानी की कमी चुनौती बनी हुई है। गंगा प्रदूषण में नमामि गंगे के तहत एस.टी.पी. निर्माण हुए, पर पटना और अन्य शहरों से अनुपचारित सीवेज अभी भी नदी में गिरता है, जो केंद्र–राज्य राजनीति को उजागर करता है।

बिहार की कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था मानसून पर निर्भर है। अनियमित वर्षा, बढ़ते तापमान और मिट्टी क्षरण ने खाद्य सुरक्षा और किसान प्रवास को प्रभावित किया। पर्यावरणीय गिरावट गरीब, दलित और ग्रामीण समुदायों को सबसे अधिक प्रभावित करती है, जिससे पर्यावरण न्याय का विमर्श उभरा। चुनावी राजनीति में बाढ़ राहत पितृसत्तात्मक कल्याण का रूप लेती है, जबकि दीर्घकालिक समाधान नदी प्रबंधन, वन संरक्षण द्वितीयक रह जाते हैं।

एस.ए.पी.सी.सी. ने अनुकूलन को प्राथमिकता दी, जिसमें जलवायु–स्मार्ट कृषि, नवीकरणीय ऊर्जा और आपदा प्रबंधन शामिल हैं। बिहार नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण की भूमिका उल्लेखनीय है, पर संस्थागत समन्वय और वित्तीय संसाधनों की कमी बाधा है। युवा, सिविल सोसाइटी और सोशल मीडिया जागरूकता बढ़ा रहे हैं, पर राजनीतिक घोषणा–पत्रों में पर्यावरणीय मुद्दे चमतपचीमतंस बने हुए हैं।

निष्कर्ष :

बिहार में पर्यावरणीय राजनीति का उभरता विमर्श विकास, लोकतंत्र और पारिस्थितिकी के जटिल अंतर्संबंध को दर्शाता है। राज्य की प्राकृतिक संवेदनशीलता और सामाजिक–आर्थिक असमानताएं पर्यावरणीय मुद्दों को राजनीतिक एजेंडे से जोड़ती हैं, पर क्रियान्वयन की चुनौतियां बनी हुई हैं। जल जीवन हरयाली, एस.ए.पी.सी.सी. और नमामि गंगे जैसी पहलें सकारात्मक दिशा दिखाती हैं, पर ये प्रतिक्रियात्मक बने रहते हैं। भविष्य में हरित अर्थव्यवस्था, जलवायु–स्मार्ट बुनियादी ढांचा और सामुदायिक भागीदारी को मजबूत करने की आवश्यकता है। पर्यावरण न्याय सुनिश्चित करना, तटबंधों की राजनीति से आगे जाकर नदी–केंद्रित प्रबंधन अपनाना और राजनीतिक दलों द्वारा घोषणा–पत्रों में पर्यावरणीय मुद्दों को मुख्यधारा बनाना जरूरी है।

बिहार गरीबी उन्मूलन और सतत विकास की यात्रा में पर्यावरणीय राजनीति को केंद्र में लाकर हरित विकास का मॉडल प्रस्तुत कर सकता है। युवा शक्ति, तकनीकी नवाचार और केंद्र–राज्य समन्वय से यह संभव है। अंततः, पर्यावरण न केवल संसाधन है बल्कि अस्तित्व, न्याय और लोकतंत्र का आधार है।

संदर्भ–सूची :

1. Nakamizo, K. (2021) : 'Climate Change and Democracy Floods and Their Political Implications in Bihar, India'. Kyoto University/Institute of International Affairs.

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 3, Issue 1, January-February 2025
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2025.v03i01.1352

2. Pearcey, M. (2021) : 'Climate Change, Democracy, and Flood Politics in Bihar'. Policy Commons.
3. Government of Bihar. (2015) : 'Bihar State Action Plan on Climate Change (SAPCC)'. Department of Environment, Forest & Climate Change.
4. Sharma, A., et al. (2022) : Environmental change and groundwater variability in South Bihar, India. 'Groundwater for Sustainable Development'.
1. 5. Pandey, D. S. (2025) : A Critical Analysis of the Bihar Government's Jal Jeevan Hariyali Initiative. 'International Journal of Science and Technology'.
5. Ranjan, A. (2024) : Environmental Politics in India Between 2014 and 2019. 'Social Change' (Sage).
6. Bihar Jal Jeevan Hariyali Mission Official Documents (2020-2025) : Rural Development Department, Government of Bihar.
7. Mongabay India. (2025) : Climate extremes in Bihar affect its people, but not politics.